

# मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवेंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल | जुलाई-अगस्त, 2011

## तुम्हारा पाप तुम्हें ढूँढ निकालेगा

“हे याकूब के घराने के प्रधानों, हे इस्राएल के घराने के शासकों, तुम जो न्याय से घृणा करते और सरल बातों को तोड़ते-मरोड़ते हो, सुनो:” (मीका 3:9)

आदमी के हृदय में स्वार्थ और पाप, उस पड़ाव तक पहुँचा है कि बहुत लोग धार्मिकता एवं सही और गलत के बीच का उचित अन्तर, पहचानने से घृणा और नफरत करते हैं। मगर बाइबल का परमेश्वर जो जीवित है, वह धर्म और सच्चा परमेश्वर है। वह न्याय करनेवाला परमेश्वर है। इसलिए उनकी नज़रों में और उनके पवित्र वचन के सामने, सारे कार्यों, विचारों तथा सारे उद्देश्यों और गुप्त इच्छाओं को परखा जायेगा। हर आदमी चाहे वह उच्च हो या नीच, सब को सुनिश्चित जाँचा जायेगा। हर एक का, जैसे का तैसा न्याय होगा।

व्यवहारिक बात है कि जब कोई माँ या बाप कुछ पैसे या सम्पत्ति छोड़कर चल बसे, तो हर बेटे की सहज प्रवृत्ति यही है कि जहाँ तक हो सके वे अपने हिस्से का भाग हाँसिल कर लें। उनमें से, अगर किसी का बहुत बड़ा परिवार हो या किसी भाई की आमदनी कम हो, उस माहौल में उन भाई बहनों के बीच इन बात का कोई महत्व नहीं रहता। ‘यह उसकी अपनी गलती है। जब पिताजी ने उसे पढ़ने का अवसर दिया तो उसे मेहनत से पढ़ना चाहिये था। कम से कम उसे एक अच्छा नौकरी तो मिलती,’ वे कहते हैं। सगे भाई के प्रति इतनी कठोर और निर्दयी बातें!

अब जीवित परमेश्वर यों कहते हैं, “क्यों तुम धर्म और न्यायी नहीं ठहर सकते? थोड़ा अधिक उपज देने वाला भूभाग, क्या तुम अपने भाई को नहीं दे सकते? जब पैसों की और धन-सम्पत्ति की बात आती है, तो क्या तुम इतनी बुराई से पेश आते हो?” मगर लोग न्याय से घृणा करते हैं।

पढाई और सांस्कृतिक उन्नति की बड़ी-बड़ी बातों के बावजूद मनें यह पाया कि संसार के कई स्थानों में, आदमी पक्षपाती, और गलत पूर्वधारणाओं से भरे हैं। कौम और जातिवाद से भरा उनका नजरिया बहुत संकीर्ण है। निष्पक्ष और न्याय संगत व्यवहार, उनके लिए मुश्किल से संभाव्य बात है। चाहे वह किसी परिवार में जमीन-जायदाद के बँटवारे की बात हो या अन्तराष्ट्रीय स्तर पर राजनीति की बात, यह बात सच है। स्वलाभ, स्वार्थ और तरफदारी ने उनकी समझ को धुँधला किया है।

आजकल लगता है कि संसार के कई भागों में, न्याय की उन्नति और निष्पक्ष, न्यायपूर्ण उद्देश्यों का समर्थन करना – अब अदालतों का लक्ष्य नहीं रहा। वकीलों पर दबाव डाला जाता है कि वे सरकार के चुनिन्दे सामाजिक योजनाओं और ऐसे कार्यवाहियों का समर्थन करें जिस में वह सरकार दिलचस्पी रखती है। इस तरह आम आदमी अपने मौलिक अधिकारों से वंचित है। मेहनत करने वाले व्यक्ति का, यह मानना उचित है कि उनका गलत फायदा उठाया जा रहा है। एक धर्मी व्यक्ति का, उनके प्रति घृणा और लापरवाही का एहसास भी उचित है। स्वच्छ मन, सत्य और न्याय के विरुद्ध, झुकाव प्रबल होने का यही सब कारण है।

आदमी के अन्यायी और अनैतिक कार्य, जीवित परमेश्वर को बाध्य या डरा नहीं सकते। हर एक व्यक्ति को, परमेश्वर के सामने, इस भौतिक शरीर में किये गये हर एक काम का लेखा-जोखा देना होगा। उनके सामने अधर्म को बेदाग नहीं पेश किया जा सकता। परमेश्वर के उच्च न्यायालय के सामने, झूठ और असत्य को कभी नजर अन्दाज नहीं किया जायेगा। वे सिर्फ आपकी आत्मा को धिक्कारेंगे और नरक की आग के योग्य ठहरायेंगे।

बहुत लोग नहीं जानते कि धार्मिकता में, न्यायविमर्श सहज और अंतर्निहित है। यानि की धार्मिकता और न्यायविमर्श साथ-साथ चलते हैं। स्पष्ट कहना है तो जब उजियाला हो जाए, सब कुछ जो छिपाया जाना चाहिए, छिपाये या जिसे, देखने का साहस लोग नहीं कर पाये, उसे ढकना। दिन के उजियाले में चोर डकैती नहीं करता। हत्यारा हत्या नहीं करता। या फिर आंतकवादी अपनी अगली मुठभेड़ के बारे में खुलेआम बैठकर चर्चा नहीं करते। सूरज उगने से पहले ही वे भाग जाते हैं।

प्रभु यीशु मसीह जो धार्मिकता का सूर्य है, उदय होगा। जब वे आपकी जिन्दगी में आते हैं, तो पाप को भागना होगा। हर दुष्ट उद्देश्य, हर बेइमान इच्छा, अशुद्ध कार्य, समलिंग या लैंगिक उदण्ड का अंत किया जाना होगा। अपने हृदय में पाप छिपाये रखना असंभव होगा।

बहुत लोग यह विश्वास करते हैं कि अधर्म, असत्य, घूस और दुष्टता का जरूर प्रतिफल मिलता है। अल्प समय तक, हालाँकि जीवित परमेश्वर अपनी महान दीर्घशान्ति से उनको समय दे। मगर यह संभव नहीं कि किसी परिवार या लोगों का समूह, जो दुष्ट है, असत्य फैलाते हैं और बेलिहाज के कार्य करते हैं, वे बहुत देर तक उन्नति पाये। उनका पतन तथ्य है और उनका जरूर पतन होगा।

कई लोग इस साधारण बात का ध्यान नहीं रखते की जो वे बोते हैं वहीं वे काटेंगे। आप जंगली बीज बोकर अच्छे गेहूँ की जोरदार फसल काटने की आशा नहीं कर सकते।

लोगों से प्यार करना, उनके लिए प्रार्थना करना और उनके ऊपर से भारी बोझ हटाना, एक पादरी का यह काम है। लेकिन, अगर वह बहुत खाने-पीने और पैसा खर्च करने का आदी हो जाये, तो वह जल्दी ही पैसों का, और ज्यादा लालच करने लगेगा। वास्तव में एक पादरी को पैसों से क्या काम है? पैसे ज्यादा हो तो उसको ले कर चिन्ता ज्यादा होगी।

कोई भी पादरी सिर्फ इसलिए प्रचार करे कि उसे पैसे दिया जा रहा है? कोई भी प्रचारक या नबी, परमेश्वर का प्रतिनिधि है। पैसे या नकदी, वह माध्यम नहीं जिसके जरिये वे कार्य करे या कुछ स्थापित करें। वह प्रार्थना और परमेश्वर से सामर्थ्य है जिसके बल, आप पर लोगों का विश्वास टिके।

आपके बैंक में करोड़ों रुपये हो, तो उससे क्या होगा? क्या उससे आपकी प्रार्थना और शक्तिशाली बनती? उसके विपरीत आप वस्तुओं का अर्जन और सांसारिकता में डूब जाओगे। पादरी जो पैसों के लिए प्रचार करते हैं वे लोगों के लिए शाप का कारण बनेंगे। एक सच्चे मसीही पादरी के लिए एक बटुआ, उसकी सोच में आखरी चीज हो। यह सच है कि मुश्किल दिन जरूर आयेंगे। मगर प्रभु जो चिड़ियों का रखवाला है आपको नहीं भूलेंगा। अपने बचपन से ही मैंने अपने माँ-बाप को पैसों की कदर किये बिना चलते, प्रचार करते देखा है। पचास साल ऐसे ही सेवा करने के बाद, मुझे मालूम है कि यही एक मात्र रास्ता है जिसमें एक सच्चा मसीही सेवक, कार्य कर सकता है।

‘हाय! हम कैसे पतन और दुर्भाग्य के दिनों में जी रहें हैं जब पादरी पैसों के लिए प्रचार करता है। और नबी पैसों के लिए नबुवत करता है!’ प्रिय पाठक, ली हुई घूस को वापस करके आप अपने इर्दगिर्द एक आध्यत्मिक संचलन शुरू कर सकते हो। और परमेश्वर के वचन से अपने विवेक को धोकर शुद्ध कर सकते हो। प्रभु यीशु मसीह अपनी शान्ति, धार्मिकता और सामर्थ्य से आपको सम्पन्न करेंगे। आपके चारों तरफ अधर्म के कार्य करने वाले भय से थरथरायेंगे।

जब परमेश्वर का आत्मा आप में कार्य करेगा, तब सही और गलत को जाँचने का प्रबल सामर्थ्य आप में होगा। न्याय के आत्मा से घृणा करने के बदले, हम उसे आपनाकर गले लगायेंगे क्योंकि उसके बिना हम ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे।

- जोशुआ दानियेल।

## परमेश्वर मेरे दाहिनी ओर है

भजन संहिता (16:8) “मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है इसलिए कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, मैं कभी न डगमगाऊंगा।”

यह अदभुत भजन है जो परमेश्वर के जन की गहरी भावनाओं को बाहर दर्शाता है। मैंने परमेश्वर को अपने कॉलेज के दिनों में अपनी दाहिनी ओर महसूस किया। उसकी कृपा द्वारा यह बाद में भी सच रहा, मेरे जीवन भर। “हमेशा तुम्हारे सामने” – मित्रों के बीच में, दुश्मनों के बीच में, आपके खेलों के बीच, भोजन के समय और सोते समय।

“मेरा मन भी रात को मुझे शिक्षा देता है। भजन संहिता ( 16:7)” जब आप परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में संजोये रखते हैं, वह सोते समय भी आपकी अगुवाई करता है। आपका हृदय किन चीजों को अधिक महत्व देता है और क्या संभालता है, आपके चरित्र का निर्णय करता है। आप अपने हृदय में जो लक्ष्य सबसे मूल्यवान समझते हैं, वह आपके काम को निर्धारित करेगा।

परमेश्वर ने अब्राहम से रात में बातें कीं, उसे आकाश के सितारे दिखाए। अपने प्रति आपकी इच्छा को गहरा करने के लिए परमेश्वर रात्रि के समय हमसे बातें कर ना चाहते हैं। तुम्हें परमेश्वर के वचन पर मनन करना चाहिए। जब परमेश्वर के विचार और परमेश्वर के वचन आपके अंतर्मन में घर कर जाते हैं और आपकी इच्छा केवल प्रभु के प्रति रहती है। आपका जीवन सफल जीवन बनेगा। यदि परमेश्वर आपका निज भाग है तो जीवन के संग्रामों में आप विजयी होंगे। परमेश्वर स्वयं आपकी मीरास हैं। वह जो क्रूस पर मरा है उसका स्वभाव ऐसा है जो संसार पर विजय पाता है। वे व्यक्ति जो परमेश्वर के विचारों तथा स्वभाव से भरे हैं कभी भी नहीं हिलाए जा सकते। चाहे वे जेल में डाले जाएँ या मार डाले जाएँ, लेकिन वे हिलाए नहीं जा सकते।

“यहोवा मेरी मीरास का भाग और मेरा प्याला है, तू मेरे भाग को सम्भालता है। भजन संहिता (16:5)” दाऊद कहता है, वह परमेश्वर को सीखता है और उनके स्वभाव को। परमेश्वर आपकी मीरास हैं और वह आपकी मीरास को बचाए रखते हैं। दाऊद इन गहरे विचारों द्वारा बड़ी ऊँचाइयों तक उठता है। “मेरे लिए माप की डोरी सुहावने स्थानों पर ही पड़ी, मेरी मीरास वास्तव में मनभावनी है। भजन संहिता (16:6)” भूमि का जो भाग परमेश्वर ने उसके लिए चुना था वह सर्वोत्तम था।

जहाँ कहीं भी आप जाओगे आप विजय पाओगे। परमेश्वर ने मेरी जवानी में ऐसी विजय मुझे दी। मैं जिस भी कॉलेज में गया उन्हें सर्वोच्च साबित किया। नौजवान उनकी ओर आकर्षित हुए। आपको ऐसे ही विजयी होना चाहिए। आपके विश्वास का सम्मान किया जाएगा। परमेश्वर की निगाह में पवित्र तथा शुद्ध रहो।

आपके लिए परमेश्वर के उद्देश्य महान हैं। दाऊद अपने दाहिने ओर परमेश्वर को सलाह देते हुए देख सका और उसे पूरे आनंद में ला सका। इस कारण वह कहता है, “मेरा शरीर आशा में विश्राम करेगा। “ शरीर, आत्मा के उद्देश्यों का दुश्मन है। सिद्धता – त्याग, आत्मिक अनुशासन और क्रूस के सामने अपने आपको झुकाने के द्वारा आती है।

“तु मुझे जीवन का मार्ग दिखाएगा, तेरी उपस्थिति में आनंद की भरपूर है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है। (भजन संहिता ( 6:11))” यदि आपकी जवानी में परमेश्वर आप के दाहिने ओर हो कर आपका भाग आपके लिए नहीं चुनते, आप कभी भी सफल नहीं हो पाओगे। परमेश्वर की इच्छा है आपको सर्वश्रेष्ठ चीजे देने की। उनका धीरज और धैर्य अदभुत हैं। अपने स्वार्थ द्वारा हम उनके उद्देश्यों को नाकाम करते

हैं। यह कितनी अदभुत बात है कि हमारे स्वार्थी और अनाज्ञाकारी होने के बावजूद, जो कुछ हमारे जीवन में बचा है उस में से वह सर्वश्रेष्ठ बनाना चाहते हैं। अपने धीरज और सहनशीलता में वह हमें सहते हैं।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन न करके हम अपने जीवन को बरबाद करते हैं। “... क्या तुम इस कारण गलती नहीं करते, क्योंकि तुम पवित्रशात्र नहीं जानते और न परमेश्वर की सामर्थ्य ?” कभी कभी लोग अपने बुद्धि में अपने आपको परमेश्वर के हाथ सौंपते हैं और परमेश्वर उस बच्चे खुचे जीवन से भी उपयोगी काम करवाते हैं। लेकिन परमेश्वर हमें हमारी जवानी के दिनों में अपने हाथों में लेना चाहते हैं। मैं बहुत बार परमेश्वर से इस गलती की माफी माँगता हूँ कि मैंने उनका आज्ञापालन नहीं किया और उनकी योजनाओं को असफल किया। हालाँकि हम उद्धार पाए हैं लेकिन हम बहुत बार उन्हें दुख पहुँचाते हैं और उनके उद्देश्यों को विफल करते हैं। मैं सोचता हूँ काश अपने कॉलेज के दिनों में मैंने और अधिक आज्ञापालन किया होता। एक दिन कुछ मित्रों को यह तार आया कि उनकी भतीजी मर गई है। लोग उन्हें सांत्वना देने के लिए प्रार्थना कर रहे थे। परमेश्वर ने मुझे प्रार्थना करने से इंकार कर दिया। सच्चाई में वह जीवित रही। तार में गलत संदेश आया था। मैंने परमेश्वर की महिमा नहीं की क्योंकि मुझे अपने मान की अधिक परवाह थी। परमेश्वर के सिद्ध जन बनने के लिए प्रगति करो। परमेश्वर तुम्हें बुला रहे हैं। उनके दाहिनी ओर सदैव बने रहने वाला आनंद है।

- एन दानिएल।

## परमेश्वर पर भरोसे का साहस

एक नाटी सफेद बालों वाली महिला अकेली एक बड़े समुद्री जहाज पर यात्रा कर रही थी। उसकी बेटी तथा उसका परिवार इंग्लैण्ड से अमरीका पलायन कर गया था, वह भी उनके पास बसने जा रही थी। उसी जहाज पर एक लखपति धनी व्यक्ति यात्रा कर रहा था जिससे कप्तान अधिकतर बातचीत करता था।

एक दिन वह महिला जहाज के ऊपरी भाग पर टहल रही थी, अफसर ने अपने धनी मित्र को कहा, “उस वृद्ध महिला को देखा है? इस जहाज पर शायद सबसे प्रसन्न व्यक्ति यह महिला ही है।”

“कैसा रुचिपूर्ण”, दूसरे ने कहा, “मैं ज़रूर इससे मिलना चाहूँगा।” “दोनों का परिचय करवाया गया, इस लखपति ने पूछा कि वह महिला कहाँ जा रही है। “अमरीका को, अपनी बेटी के पास रहने”, उसने सादे से जवाब दिया।

“अमरीका के किस भाग में?”

“माफ कीजिए। मैं शहर का नाम नहीं जानती, क्योंकि मैं अपनी बेटी का पत्र खो बैठी हूँ और मैंने किसी को मुझे लेकर आने के लिए भी नहीं लिखा है, क्योंकि पत्र की तेजी से मैं स्वयं पहुँच सकती हूँ। लेकिन मेरे स्वर्गीय पिता परमेश्वर इस बात को संभालेंगे कि मैं ठीक से उस जगह को ढूँढ सकूँ।” “कप्तान और उसके मित्र ने एक दूसरे की ओर अचंभे से देखा। अंत में उनमें से एक बोला, “लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका एक बड़ा स्थान है, और एक घर को ढूँढना, शहर या राज्य का पता न होने पर असंभव बात है।”

“ओह, लेकिन वह एक सुंदर घर है जिसके आगे दो बड़े अखरोट के पैड़ लगे हैं, मुझे भरोसा है ढूँढना इतना कठिन नहीं होगा”, वृद्ध महिला ने जोर दिया। “जो भी हो”, मीठे से बोली, “ऊपर मेरा पिता सब कुछ इसके बारे में जानता है, चाहे अमरीका हमें बढ़ा लगे लेकिन उसके लिए वह छोटा ही है।”

जिस दिन वह जहाज न्यूयार्क शहर के किनारे लगा, कप्तान ने अपने एक अफसर को यह जिम्मेवारी दी कि वह उस महिला को उस होटल में पहुँचा दे जहाँ वह स्वयं ठहरेगा, क्योंकि वह सचमुच उस महिला का आदर करने लगा था।

जैसे वह दोनों भीड़ भरे शहर में रास्ते पर जा रहे थे, उस अफसर ने उस महिला को कोने में ठहरने को कहा कि जब तक वह एक अखबार खरीद लाए। उसने हामी भरी।

पर अगले ही क्षण एक सिपाही आया और यह मानकर कि वह महिला सड़क पार करना चाहती है उसके हाथ को पकड़ा और बोला, “यही ठीक समय है आपको सड़क पार करने का।” इससे पहले वह विरोध कर पाती, बेचारी ने अपने को भीड़ से घिरे सड़क के दूसरी ओर पाया। वह कुछ दूर तक एक खुले स्थान तक पहुँची एक गेराज के पास, वह एक ओर हट कर सहायाता के लिए प्रार्थना करना चाहती थी, जिसकी उसे बड़ी जरूरत थी।

अचानक उसका ध्यान एक आदमियों के समूह पर गया जो पास ही खड़ा था, उनमें से एक ने घूम कर उसकी ओर देखा, वह चौंक गई और खुशी से चिल्लाई “जॉन! ऐ जॉन! क्या सचमुच में तू ही है?”

“माँ!” चौंकते हुए जवाब आया, वह सज्जन तेजी से उसकी ओर आया, “आप यहाँ कैसे पहुँच गई?”

“क्यों, मैं एक जहाज़ से यहाँ पहुँची, लेकिन मैं मेरी का पत्र खो बैठी और पता भूल गई, इसलिए मेरे लिए परमेश्वर को तुम्हें खोजना पड़ा।” “लेकिन माँ”, वह अचंभित होते हुए बोला, “हम न्यूयार्क से बहुत दूर रहते हैं और हालाँकि इस कम्पनी के लिए मुझे काम करते कई वर्ष बीत गए हैं जिसका यहाँ मुख्यालय है, मैं आज तक कभी इस शहर में नहीं आया।”

“ओह! इससे परमेश्वर को कोई फर्क नहीं पड़ता। ” उसने मुस्कराते जवाब दिया। “अब मुझे वापस उस जहाज़ पर ले चल ताकि मैं उसके कप्तान को दिखा सकूँ कि कैसे मेरे स्वर्गीय पिता परमेश्वर ने मेरी देखभाल की है।”

दोनों ने कप्तान को अपने अफसर को झाड़ ते हुए पाया कि उसने वृद्ध महिला को अकेला और बिना सहारे के छोड़ दिया। “वह खो गई है और यह सारी तुम्हारी गलती है।”, कह रहा था। “ओह, देखो मैं यहाँ हूँ”, वार्तालाप के विषय ने पुकारा, “और मैं आपका परिचय अपने प्रिय दामाद से करवाना चाहूँगी जिसे परमेश्वर ने मेरे लिए इतनी दूर न्यूयार्क भेजा है। और साथ ही, मैं चाहती हूँ कि आप स्वयं देख लो कि परमेश्वर पर संपूर्णता और सच्चाई से भरोसा करना मूर्खता नहीं है।”

- चुनीहुयी

## चोर और न्यायाधीश

शहर के मुख्य भाग में एक समृद्ध चर्च थी। उसकी तीन मिशन चर्च थीं, जो वहाँ से चालू हुईं। नववर्ष के पहले रविवार, मिशन चर्च के सभी सदस्य मुख्य चर्च में “प्रभु के भोज” की सेवा में भाग लेने के लिए आये। उन मिशन चर्चों में जो शहर के झुग्गी झोंपड़ी वाले इलाके में थी, कुछ अनोखे मन फिराव के उदाहरण थे – चोर, लुटेरे आदि – लेकिन सभी सेवा में भाग लेने वाले स्थान पर इकठ्ठे घुटने टेके बैठे थे।

ऐसे समय पादरी जी ने देखा कि एक पुराना चोर, इंग्लैण्ड के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के साथ घुटने टेके बैठा है – यह वही न्यायाधीश था जिसने उसे सात साल की कैद की सजा सुनाई थी। जेल से सजा पूरी करने के बाद इस चोर ने अपना मन फिराया और एक मसीही सेवक बन गया। लेकिन, वहाँ घुटने टेके, न्यायाधीश और पुराने चोर का ध्यान एक दूसरे की ओर नहीं गया।

सभा के बाद, जज पादरी जी के साथ घर की ओर लौट रहे थे और वह पादरी जी से बोले, “क्या आपने ध्यान दिया कि आज ‘प्रभु के भोज’ की मेज के पास मेरे साथ कौन बैठा था?” पादरी जी ने उत्तर दिया, “हाँ लेकिन मुझे लगा कि आपको इसकी जानकारी नहीं है।”

दोनों साथ-साथ कुछ दूरी तक चुपचाप रहे, तब जज ने कहा, “कृपा का कैसा चमत्कार!” पादरी जी ने हामी भरते हुए कहा, “हाँ, कृपा का कैसा अदभुत चमत्कार!” तब जज ने कहा, “लेकिन आपका इशारा किसकी

ओर है?” पादरी जी ने उत्तर दिया “क्यों उस अपराधी के मन फिराव की ओर।” जज बोला, “लेकिन मेरा इशारा उसकी ओर नहीं था। बल्कि मैं अपने बारे में सोच रहा था।”

पादरी अचंभित होते हुए बोले, “आप अपने बारे में सोच रहे थे? मेरी समझ में नहीं आया।”

“हाँ”, जज ने उत्तर दिया, “उस चोर को जेल से बाहर आकर मन फिराने में ज्यादा कठिनाई नहीं हुई। उसके इतिहास में कुछ और नहीं केवल अपराध ही थे और जैसे ही उसने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में देखा, वह जान गया कि उसके लिए उद्धार और आशा उपलब्ध हैं। वह यह भी जानता था कि उसे इसकी कितनी आवश्यकता है।”

“लेकिन मुझे देखो। मुझे बचपन से ही सभ्य रह कर जीना सिखाया गया। मैं अपने दिए गए वचन को पूरा करूँ, मैं प्रार्थना करूँ, चर्च जाऊँ, ‘प्रभु के भोज’ में भाग लूँ और कितनी दूसरी बातें। मैंने आक्सफोर्ड कॉलेज से डिग्रीयाँ प्राप्त की और वकील बना। आखिर में जज बना।”

“पादरी साहब, यह कुछ और नहीं, केवल यह परमेश्वर की कृपा ही थी, जिस कारण मैं यह स्वीकार कर पाया कि मैं उस अपराधी के बराबर पापी हूँ। इस बात को मुझे कबूल करने में कि परमेश्वर की निगाह में मैं जेल की सजा पाए अपराधी से बेहतर नहीं हूँ, मेरे घमंड और धोखे की माफी में अधिक कृपा लगी।”

- चुनीहुयी

## धूल में पड़ा हीरा

एक रात एक लड़का बिजली के खम्भे के नीचे गली में खड़ा नाविकों की भाँति गालियाँ बक रहा था। डॉ. होमर स्टंटज़, उस लड़के के पास पहुँचे और खेल मज़ाक करने लगे, वह इस बात पर भरोसा रखते थे कि बिगड़े हुए लड़के भी परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा पूरी तरह बदल सकते हैं। जब लड़के ने उन्हें मित्र की भाँति व्यवहार करते पाया तो और अधिक गालियाँ बकने लगा। लड़के के अपशब्दों की परवाह न करते हुए, साथ ही उस असभ्य दिखने वाले लड़के के भीतर महान गुणों को भाँपते, इस सज्जन ने उसे अपने संडे स्कूल में सदस्य बनने के लिए निमंत्रण दिया। लड़के ने वादा किया लेकिन उसे पूरा नहीं कर पाया। वफादार शिक्षक हताश नहीं हुआ और लगातार उसे अपनी कक्षा में निमंत्रण देता रहा।

आखिरकार लड़का कक्षाओं में आने लगा। वह मोटे दिमाग का, आदर न करने वाला तथा कक्षा में सबसे बेकार लड़का था। वह लगातार ऐसे सवाल पूछता था जिनका उत्तर कोई नहीं दे पाता था। किसी तरह वफादार और धैर्यवान शिक्षक ने उन चतुर सवालियों के पीछे बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि को पाया। समय बीतता गया। एक दिन डॉ. स्टंटज़ ने कहा, “मेरे बच्चे, क्या तुम कॉलेज जाना पसंद करोगे?” “संसार के सर्वश्रेष्ठ कॉलेज में” लड़के ने टिमटिमाती आँखों से उत्तर दिया। वह नार्थ वेस्टर्न विश्वविद्यालय का छात्र बन गया और वहाँ अच्छी प्रगति की। बाद में वह एक जाना माना बेस बॉल खिलाड़ी बन गया। एक रविवार की दोपहर उसने शिकागो के स्कीड रो में सुसमाचार को सुना। उसे अपने पाप का बोझ हुआ और वह उद्धारकर्ता की ओर फिरा।

वह लड़का कौन था, जिसमें संडे स्कूल के शिक्षक ने छिपे हुए गुणों को देखा और ऐसी पूं जी लगाई जिसका ब्याज मसीह के न्याय सिंहासन के इस ओर मूल्य आंक पाना कठिन है ? वह कोई और नहीं, बिली संडे था। विश्व प्रसिद्ध सुसमाचार प्रचारक, जिसका वफादार प्रचार और लोगों को जीतने वाली सेवा बहुतों को मसीह के पास ले आई।

- चुनीहुयी

## आशा न छोड़ना

थॉमस एडिसन – शायद इतिहास में ही एक महान आविष्कारक है। उन्होंने केवल तीन महीनों की औपचारिक शिक्षण पायी है। मगर उनके 1093 आविष्कारों ने इस दुनिया को बदल दिया। उन्हें चलचित्र, विमोग्राफ यंत्र, फोनोग्राफ और बिजली का बल्ब इत्यादि विशेष आविष्कार है।

उनका रहस्य क्या है? “एक प्रतिशत प्रेरणा और निरन्यानवे प्रतिशत मेहनत का पसीना।” (जैसे उन्होंने कहा), अपनी परियोजनाओं में निमग्न वे लगातार कई दिनों तक उन पर काम करते, बीच में पल भर के लिए झपकी लेते; इस तरह उन्होंने स्वयं इस परिभाषा को प्रमाणित किया।

वे असफलताओं से कभी निराश नहीं होते थे। जब संचायक बैटरी पर उनके दस हजार प्रयोगों का नतीजा असफल रहा तो उनके एक दोस्त ने उनको सान्त्वना देने की कोशिश की। “क्यों, मैं असफल नहीं हूँ। एडिसन ने चुटकुला छोड़ते कहा, “मैंने अभी-अभी दस हजार तरीकों का पता लगाया, जो काम नहीं करते हैं।”

मसीही जीवन में असफलताओं के प्रति हमारा नजरियाँ सही हो। क्यों कि विफलता ही सफलता का सोपान है। इसलिए आशा न छोड़ना!

- चुनीहुयी

## सत्य की परख!

भजन संहिता (16:8) “मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है इसलिए कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, मैं कभी न डगमगाऊंगा।”